कर्मस्तव कर्मग्रंथ सह पद्यानुवाद

सर्वोदय ग्रंथावली
६४६

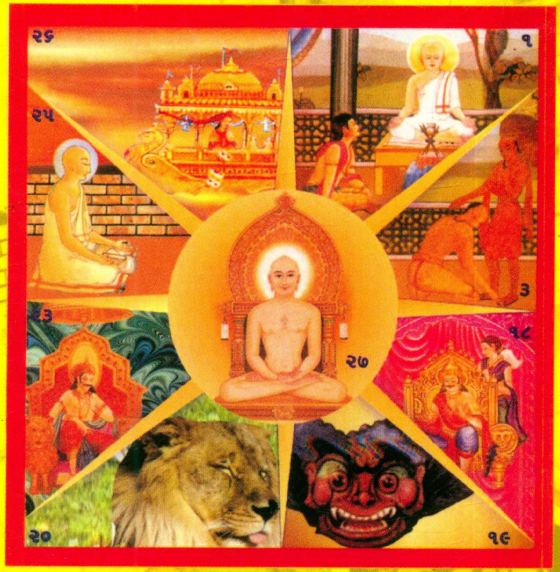

संयोजक - प.पू. श्रुतोपासक मुनिश्री सर्वोदयसागरजी म. सा.

।। उदयो भवतु सर्वेषाम् ।।

श्री चारित्ररत्न फा. चे. ट्रस्टनी विविध प्रवृतिओनी झलक

- श्री गृहमंदिरनी योजना
- श्री जिन प्रतिमाजीनी अष्ट मंगल पाटली योजना
- श्री गुरुमूर्तिओनुं निर्माण
- श्री ताम्रयंत्रोनी संकलना
- श्री आगम साहित्य
- श्री अर्वाचीन साहित्य
- श्री प्राचीन साहित्यनुं पांच-छ भाषामां संकलन
- श्री मल्टीकलर साहित्य
- पू. आ. श्री गुणसागरसूरि ज्ञानसंस्कार शिबिरनुं आयोजन
- गुरुगुण गीत गंगा केसेटोनुं आयोजन

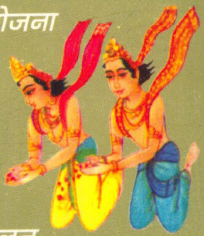

पुस्तक प्राप्ति स्थान

विराग-तेजस-ऋजु गंगर
रमेश अपार्टमेन्ट, अहिल्या बाग सामे, थाणा

श्री सोमचंद भाणजी लालका
मुंबई गली, पो.-अमलनेर,
जि.-जलगाम, महाराष्ट्र-४२५४०१

मनोज जैन
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा, गांधीनगर, ३८२००७

सर्वोदय ग्रंथावली - ६४६
सामायिकमां स्वाध्याय - गुणश्रेणी - ४६

श्री देवेंद्रसूरिकृत
कर्मस्तव कर्मग्रंथ मूळ साथे गुर्जर पद्यानुवाद

पद्यानुवादक
पूज्य श्रुतोपासक मुनिराज श्री सर्वोदयसागरजी म. सा.

प्रकाशक
श्री चारित्ररत्न फा. चे. ट्रस्ट
सौजन्य :- श्री जैन श्वे. मू. पू. संघ ज्ञानखाता - सेंधवा (म.प्र.)
वीर सं. २५३५, वि. सं. २०६५, आर्य संवत ८२९, गुणसंवत - २१

।। उदयो भवतु सर्वेषाम् ।।

।।श्री महावीराय नमः।।। श्री सर्वोदय पार्श्वनाथाय नमः।।। श्री गौतमस्वामिने नमः।।
अचलगच्छेश जंगमयुगप्रधान आ. श्री आर्यरक्षित जयसिंह महेन्द्रप्रभ मेरुतुंग धर्ममूर्ति कल्याण गौतम गुणसागरसूरिभ्यो नमः।।

दिव्य कृपा

कलिकाल कल्पतरु जंगमयुगप्रधान अचलगच्छेश प.पू. आ.भ.श्री गौतम - नीति - गुणसागरसूरीश्वरजी म. सा.

शुभ आशीर्वाद

अचलगच्छाधिपति प.पू. आ.भ.श्री गुणोदयसागरसूरीश्वरजी म. सा.
प.पू. युवाचार्य श्री कलाप्रभसागरसूरीश्वरजी म.सा.
पू. गणिवर्यो, पू. मुनिवर्यो आदि

प्रेरणादाता

प.पू. तपस्वी मुनिराज श्री चारित्ररत्नसागरजी म.सा.

शुभेच्छुक

प.पू. मुनि श्री जगवल्लभ-गुणवल्लभसागरजी म.सा. आदि ठाणा - ५०

मार्गदर्शक

प.पू. मुनिराज श्री उदयरत्नसागरजी म.सा.

संपादक

मनोज आर. जैन - कोबा

मूल्य २५ रु. ।। उदयो भवतु सर्वेषाम्।। वि. सं. २०६५, प्रथमावृत्ति

प्रास्ताविकम्

आ पुस्तिकामां आचार्य प्रवर श्री देवेन्द्रसूरिजी रचित कर्मस्तव नामक द्वितीय कर्मग्रंथ आप्यो छे. आ कर्मग्रंथमां प्रभु महावीरदेवे जे जे गुणठाणाओने विशे बंध, उदय, उदीरणा अने सत्ताना स्थानमां प्राप्त थयेला सघळा कर्मोने खपाव्या हता, तेनुं वर्णन गुणस्थानकनी श्रेणिए आपीने चौदगुणठाणाओमां कर्मस्वरूप वर्णववा द्वारा श्री महावीर प्रभुनी स्तुति करेल छे.

तेमा प्रथम चौद गुणठाणानुं स्वरूप, दरेक गुणस्थाने बंध, उदय, उदीरणा अने सत्ताए केटली केटली कर्मप्रकृतिओ होय छे तेनुं वर्णन करेल छे. तेमज कर्मप्रकृतिनी संख्या बतावनारा यंत्रो अने दरेक गुणस्थाने कई कई कर्मप्रकृतिओनो बंध, उदय, उदीरणा अने सत्ताए विच्छेद करे छे तेनुं स्वरूप दर्शावेल छे.

पूज्य मुनिश्री सर्वोदयसागरजी म. सा. ता. २१-१२-०५ थी ता. २३-०४-०६ सुधी श्री वीरचंद सोनी परिवारना तलासरीना N. N. सन्स पेट्रोलपंचना निवास स्थाने रह्या हता. पूज्यश्री साथे पूज्य मुनिराज श्री गुणवल्लभसागरजी म.सा. हता. चार महिनानी स्थिरता दरम्यान पूज्य गुणवल्लभसागरजीए १५००

गाथाओ कंठस्थ करी हती ज्यारे पूज्य श्रुतोपासक विद्वान् मुनिराज श्री सर्वोदयसागरजीए २० नूतन रचनाओ करी हती तेमांथी त्रणभाष्य, छ कर्मग्रंथनी मळी नव रचनाओ आ प्रकाशन श्रेणीमां आपवामां आवी छे. प्रस्तुत पुस्तिकामां अमे पूज्य मुनिश्री द्वारा रचित गुर्जरभाषाबद्ध कर्मस्तव नामक द्वितीय कर्मग्रंथनो पद्यानुवाद प्रारंभमां आप्यो छे अने पछी द्वितीय कर्मग्रंथ मूळ आपेल छे जेथी वाचक-मुमुक्षुओ गाथाओनो स्वाध्याय अने अर्थनी अवधारणा बन्ने साथे करी शकशे. वधु ऊंडाणपूर्वक अभ्यास करवा मांगता जिज्ञासुओ माटे आ पुस्तिकाना प्रान्ते द्वितीयकर्मग्रंथने लगता प्राप्तसाहित्यनी टीप आपवामां आवेल छे.

परम पूज्य श्रुतोपासक विद्वान् मुनिप्रवर श्री सर्वोदयसागरजी महाराजश्रीना सत्प्रयास अने प्रेरणाथी आ रीते जीवविचार आदि चार प्रकरणो, त्रणभाष्यो अने छ कर्मग्रंथोनो मूळ साथे पद्यानुवाद सर्वप्रथमवार छपाई रह्यो छे. अने ते ज्ञानपिपासुओ माटे आशीर्वाद रूप सिद्ध थशे. पूज्य मुनिराज श्री उदयरत्नसागरजी म. सा. ए आ कार्यमां सुंदर मार्गदर्शन करेल छे. आ पद्यानुवादने अक्षरशः निरीक्षण करी आपवा बदल पं. श्री चन्द्रकान्तभाई एस. संघवी-पाटणनो तेमज दरेक प्रकरणोना साहित्यनी नोंध आपवा बदल

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर-कोबा तथा पं. जितेन्द्र बी. शाहनो (एल.डी. इन्डोलोजी-अमदावाद) अन्तःकरणपूर्वक आभार व्यक्त करीए छीए.

प्रकाशन संस्था श्री चारित्ररत्नफा.चे.ट्रस्टे प्रभु महावीरना २५३५मा निर्वाण महोत्सवना उपलक्षमां २५३५ ग्रंथो प्रकाशित करवानो महान संकल्प कर्यो छे. ए संदर्भमां ५०० जेटला ग्रंथो प्रकाशित थई चूक्या छे. तेनो अमने खूबज हर्ष छे. जेमां ५०० पूजन प्रतो पैकी २०० प्रतो प्रकाशित थई गई छे, ५०० अप्रगट ग्रंथो पैकी ५० ग्रंथो प्रेसमां छे, १३५ कथा ग्रंथो छ भाषामा अने ५ भाषामां प्रकाशित थया छे जे साधु-साध्वीजीओने भणवा माटे खूबज उपयोगी छे, ४५ आगम सचित्र गुजराती, हिंदी अने अंग्रेजी भावार्थ साथे प्रकाशित थयेल छे, ३०० रास वि. मर्यादित नकलो प्रकाशित करी छे, अचलगच्छनी १०० पूजाओ पैकी ५० प्रकाशित करी छे, १०० ढालिया, १५० अचलगच्छीय आर्चार्योना संस्कृत चरित्रो, १०८ करमशी खेतशी खोनानुं अप्रगट साहित्य, १५० श्री पार्श्वभाईनुं अप्रगट साहित्य, ५१ गुणमंजूषा प्रकाशित थयेल छे. ५१ स्तोत्रो खंडान्वय-दंडान्वय अने पदच्छेद युक्त प्रकाशन थई रह्या छे जेमां २१ स्तोत्रो प्रेसमां छे. तदुपरांत १२०

सामायिकमां स्वाध्याय पुस्तिकाओ, २२५ विविध ग्रंथो आम कुल मळीने २५३५ ग्रंथो थाय छे. हमणासुधी आ कार्य धीमी गतिए चालतुं हतुं ते हवे देव-गुरु पसाये वेगवंतु चालशे एवी आशा छे.

ट्रस्टना निर्णयो

१. हवे पछी बधा ग्रंथो मल्टी कलरमां छपाशे.

२. ग्रंथो माटे दाननी अपील बहार पडशे नहि.

३. अध्ययनमां उपयोगी माहिती अलभ्य बने तो पोस्टल खर्च तथा झेरोक्ष खर्च लईने व्यवस्था करी आपवी.

४. प्रकाशित ग्रंथो कोईने पण भेटमां आपवा नहि.

५. वि.सं २०६७ पछी योग्य समये ट्रस्टनुं विसर्जन करी देवाशे.

अन्ते वाचक वर्गने नम्र विनंति करीए छीए के प्रमादवश आ प्रकाशनमां कोई प्रकारे त्रुटीओ रही गई होय तो सूचित करशो जेथी पुनरावृत्तिमां सुधारो वधारो करी शकीशुं.

- लि. श्री चारित्ररत्न फा. चे. ट्रस्टवती
श्री सोमचंद भाणजी लालका
श्री जेन्तीलाल जेठाभाई मैशेरीना
सादर जयजिनेंद्र

कर्मस्तव कर्मग्रंथनो पद्यानुवाद

मंगलाचरण

नमुं वीरने गोयम गुरु जेवा गुणसूरिने वंदन करुं
देवेन्द्रसूरि रचित कर्मस्तवने गुर्जर पद्ये रचुं
गुणस्थानकमां रहीने बंध उदय उदीरणा सत्ता
सकल कर्मोने खपाव्या मने बुद्धि आपो गुणवत्ता १

१४ गुणस्थानक

मिथ्यात्व सास्वादन मिश्रने अविरतिने देशविरति छे
सर्वविरति अप्रमत्तने निवृत्ति-अनिवृत्ति करण छे
सूक्ष्म संपराय उपशांत क्षीणमोह सयोगी केवली छे
अयोगी केवली - गुणस्थानो चौद क्रमथी गणाय छे २

१४ गुणस्थानके बंध

नवा कर्मो जे ग्रहे तेने शास्त्रकारो बंध कहे छे
ओघमां प्रकृति ए जणावे एकसोवीश ग्रन्थे भणे छे
जिन नाम आहारक द्विक एकसो सत्तर गणाय छे
प्रथम गुणस्थानके जाणो विवेचन एनुं कराय छे

ज्ञान पांचने दर्शन नव बे वेदनीय तमे जाणजो
छवीस मोह आयु चार सडसठ नामना गणायजो
गोत्र बे अंतराय पांच बंधमां ओघनी प्रकृतिओ
क्रमथी गणतां एकसोवीश विस्तार एनो जाणी लीओ ३

सास्वादन गुणस्थानक

नरक त्रिक जाति चतुष्क स्थावर चतुष्क हुंडक छे
आतप छेवट्ठु नपुंसकने मिथ्यात्व सोळनो अंत छे
एकसो एक सास्वादने मिश्रे चुमोतेर बंधाय छे
तिर्यंच त्रिक थीणद्धि त्रिक दुर्भग त्रिक अंत थाय छे ४
अनंतानुबंधी चार कषाय चार संस्थान संघयण छे
नीच गोत्र उद्योत जाणो अशुभ विहायोगति छे
ए पच्चीशनो अंत थाता बे आयुष्यनो अबंध छे
त्रीजु गुणस्थानक मिश्रमां चुमोतेर कर्मो बंधाय छे ५

समकित गुणस्थानक

जिन नाम बे आयुष्य थातां सम्यक्त्वे सित्तोतेर बंधाय छे
वज्रऋषभने नरत्रिक अप्रत्याख्यानीय कषाय छे
औदारिक द्विक अंत थाता देशविरतिए सडसठ छे

पांचमां गुणस्थान अंते त्रीजो कषाय ए तो जाय छे ६

प्रमत्त गुणस्थानक

प्रमत्तमां त्रेषठ बंधाय अरति अस्थिर द्विक शोक छे
अयश अशाता छ ने जाणो देवायु माटे विकल्प छे ७

अप्रमत्त गुणस्थानक

अप्रमत्ते छे ओगणसाठ आहार द्विके अट्ठावन छे
सात गुणस्थानक थया हवे आठमुं कहेवाय छे ८

निवृत्ति गुणस्थानक

अपूर्वकरणना त्रण भागे पहेले अट्ठावन जाणो
निद्रा द्विकनो अंत थाता बे थी छ भागे छप्पन माणो
त्रीश प्रकृतिनो अंत थाता सातमा भागे छव्वीस बंधाय
हास्य रति भय जुगुप्सा अंते चारनो अंत जणाय ९-१०

अनिवृत्ति गुणस्थानक - सूक्ष्म संपराय

अनिवृत्तिना पांच भागमां पहेले बावीस बंधाय छे
एक एक घटता पांच जाता सूक्ष्मे सत्तर बंध थाय छे

११-१२-१३-१४ गुणस्थानक

दसमा गुण अंते सोळ जाता त्रणमां शाता बंध थाय छे

चौदमां अबंधक होता जल्दी मोक्षे पहोंचाय छे ११-१२

उदय

बंध पूर्ण थाता उदयने उदीरणाने कहेवाय छे
विपाकथी भोगवे उदय जाणो उदीरणाए पराणे खेंचाय छे
एकसो बावीस प्रकृति कहे मिथ्यात्वे एकसो सत्तर छे
मिश्र सम्यक् आहारक द्विक जिननामनो अनुदय छे १३
सास्वादने ते एकसो अग्यार त्रीजा मिश्रे सो'ने जाणोजी
सम्यक्त्वे एकसो चार उदये शास्त्रनी वात प्रमाणोजी १४-१५
देशविरते सत्यासी जाणो प्रमत्ते एक्याशी उदये छे
अप्रमत्ते छहुंतेर जाणो विस्तार ग्रंथमां जोय छे १६-१७
सम्यक्त्व मोह त्रण संघयणो अपूर्वकरणे बोंतेर छे
हास्यादि छ नो अंत थाता अनिवृत्तिए छासठ छे १८
संज्वलन त्रिकनो अंत थाता सूक्ष्म संपराये साठ छे
संज्वलन लोभनो अंत थाता अग्यारमो उपशांत मोह छे १९
क्षीण मोह उपान्त्ये रहे सत्तावन अंते पंचावन छे
चौद प्रकृतिनो अंत थये सयोगी बेंतालीश रहे छे
सयोगीए बार उदय होय चरमे सर्व अंत थाय छे

जीव सिद्धिगतिने पामे उदय पूर्ण जणाय छे २०-२२

उदीरणा

छ गुणस्थानक सुधी तो उदयने उदीरणा एक छे
सातमे त्रउंतेर प्रकृति छे आठमे ओगणसीत्तेर छे
नवमे त्रेसठ दसे सत्तावन अग्यारे छप्पन बारे बावन
तेरमे ओगणचालीश जाणो अयोगीए नही प्रकृति धन्न २३-२४

सत्ता

कर्मोना पुद्गलो आत्म प्रदेशे स्थिर रहे सत्ता कहेवाय
एकथी अग्यारे विकल्पे एक सो अडतालीस देखाय
बीजे त्रीजे जिननाम विना एकसो सुडतालीस होय छे
चोथेथी साते एकसो एकतालीस
अपूर्व चारे एकसो बेतालीश २५-२६
चोथेथी साते क्षपक जीवोने एकसो पिस्तालीस होय छे
चोथेथी नवना एक भागे एकसो आडत्रीस जोय छे
नवमा गुणे बीजा भागे एकसो बावीस होय छे
त्रीजा भागे एकसो चौद चोथा भागे एकसो तेर छे २७-२८
पांचमे एकसो बार जाणो छट्ठे भागे एकसो छ वखाणो

सातमे भागे एकसो पांच आठमे भागे एकसो चार छे
नवमे भागे एक सो त्रण दशम गुणे एकसो बे छे
क्षीण मोह उपान्त्ये एकसो एक अंते नव्वाणुं प्रकृति छे २९-३०
सयोगी केवलीए प्रकृति पंच्याशी ग्रन्थमां जणाई छे
अयोगी उपान्त्ये त्रौतेर विकल्पे बोतेर जाय छे
तेर प्रकृति सत्तामां होय मनुष्य त्रिक आदेय यश
त्रस त्रिक उच्च गोत्र सुभग जिननाम पंचेन्द्रि वेदनी तस ३१-३३
मनुष्यानुपूर्वी विना सत्तामां बार प्रकृति पण जणावी छे
देवेन्द्रसूरिए कर्मस्तवमां आ रीते पण गणावी छे ३४
मल्लिनाथ छत्र छाया लई तलासरीमां करी गणना
एन. एन. सन्से स्थिरता थई एक दिवसमां थई रचना

इति कर्मस्तव कर्मग्रंथ पद्यानुवाद संपूर्ण

कर्मस्तव कर्मग्रंथ मूल

तह थुणिमो वीरजिणं, जह गुणठाणेसु सयलकम्माइं;
बंधुदओदीरणया-सत्ता-पत्ताणि खविआणि. १
मिच्छे सासणमीसे अविरयदेसे पमत्त अपमत्ते;
निअट्टि अनिअट्टि, सुहुमुवसम-खीण-स-जोगिअ-जोगि गुणा. २
अभिनव-कम्मग्गहणं, बंधो ओहेण तत्थ वीससयं;
तित्थयराऽऽहारगदुग-वज्जं मिच्छंमि सतरसयं. ३
नरयतिग जाइथावर-चउ हुंडाऽऽयव छिवट्ठ नपु-मिच्छं;
सोलंतो इग-ऽहिअ सय, सासणि तिरिथीणदुहगतिगं. ४
अणमज्झाऽऽगिइसंघयण-चउनिउज्जोअ कुखग इत्थि त्ति;
पणवीसंतो मीसे, चउ-सयरि दु-आउअ अबंधा. ५
सम्मे सग-सयरि जिणा-ऽऽउबंधि वइर-नर-तिअ-बिअ-कसाया;
उरलदुगंतो देसे सत्तट्ठी तिअ-कसायंतो. ६
तेवट्ठि पमत्ते सोग, अरइ अथिरदुग अजस अस्सायं;
वुच्छिज्ज छच्च सत्त व, नेइ सुराउं जया निट्ठं. ७

गुणसट्ठि अप्पमत्ते, सुराउ बंधंतु जइ इहागच्छे;
अन्नह अट्ठावन्ना, जं आहारगदुगं बंधे. ८
अडवन्न अपुव्वाइंमि, निद्द-दुगंतो छपन्न पणभागे;
सुरदुग पणिंदि-सुखगइ, तसनव उरलविणु तणुवंगा. ९
समचउरनिमिणजिणवन्न, अगुरुलहुचउछलंसि तीसंतो;
चरमे छवीसबंधो, हास रइ कुच्छ भय भेओ. १०
अनिअट्टि भागपणगे, इगेगहीणो दुवीसविहबंधो;
पुम संजलण-चउण्हं, कमेण छेओ सत्तर सुहुमे. ११
चउदंसणुच्चजसनाण, विग्घदसगंति सोलसुच्छेओ;
तिसु सायबंध छेओ, सजोगि बंधंतुऽणंतो अ. १२
उदओ विवागवेअण-मुदीरणमपत्ति इह दुवीससयं;
सतरसयं मिच्छे मीस-सम्म-आहार-जिण-ऽणुदया. १३
सुहुमतिगाऽऽयव मिच्छं, मिच्छंतं सासणे इगारसयं;
निरया-णुपुव्वि-ऽणुदया, अण-थावर-इग-विगल-अंतो. १४
मीसे सयमणपुव्वी-ऽणुदया मीसोदएण मीसंतो;
चउसयमजए सम्मा-ऽणुपुव्वि-खेवा बिअ-कसाया. १५

मणुतिरिडणुपुव्वि विउवडट्ठ, दुहग-अणाइज्जदुग सत्तरछेओ;
सगसीई देसि तिरिगइ-आउ निउज्जोअ ति कसाया. १६
अट्ठच्छेओ इगसी, पमत्ति आहार-जुअल-पक्खेवा;
थीणतिगाऽऽहारगदुग-छेओ छस्सयरि अपमत्ते. १७
समत्तं तिम-संघयण-तिअग-च्छेओ बिसत्तरि अपुव्वे;
हासाऽऽइछक्कअंतो, छसट्ठि अनिअट्टि वेअ-तिगं. १८
संजलणतिगं छ छेओ, सट्ठी सुहुमंमि तुरिअलोभंतो;
उवसंतगुणे गुणसट्ठि, रिसहनारायदुगअंतो. १९
सगवन्न खीणदुचरिमि, निद्द-दुगंतो अ चरिमि पणवन्ना;
नाणंतरायदंसण-चउ छेओ सजोगि बायाला. २०
तित्थुदया उरलाऽथिर-खगइदुग परित्ततिग छ संठाणा;
अगुरुलहु वन्नचउ निमिण-तेअकम्माऽऽईसंघयणं. २१
दूसर सूसर साया-ऽसाएगयरं च तीसवुच्छेओ,
बारस अजोगि सुभगाऽऽइज्ज-जसऽन्नयरवेअणिअं. २२
तसतिगपणिंदिमणुआऽऽउ, गइ-जिणुच्चं ति चरिमसमयंतो;
उदउव्वुदीरणा परमपमत्ताऽऽइ सगगुणेसु. २३

एसा पयडि-ति-गूणा, वेयणियाऽऽहारदुअल थीणतिगं;
मणुआऽऽउ पमत्तंता, अजोगि अणुदीरगो भयवं. २४
सत्ता कम्माण ठिई, बंधाऽऽइ-लद्ध अत्त-लाभाणं;
संते अडयाल-सयं, जा उवसमु विजणु बिअतइए. २५
अपुव्वाऽऽइचउक्के अणतिरिनिरयाऽऽउविणु बियाल-सयं;
सम्माइचउसु सतग-खयंमि इगचत्तसयमहवा. २६
खवगं तु पप्प चउसु वि, पणयालं निरयतिरियसुराउ विणा;
सत्तगविणु अडतीसं, जा अनिअट्टि पढम भागो. २७
थावरतिरिनिरयाऽऽयव-दुग थीणतीगेग विगल साहारं;
सोलखओ दुवीससयं, बीअंसि बीअतिअकसायंतो. २८
तइआइसु चऊदसतेर, बारछपण-चउतिहियसय कमसो;
नपुइत्थिहासछग-पुंस, तुरिअ-कोह-मय-माय खओ. २९
सुहुमि दुसय लोहंतो, खीणदुचरिमेगसय दुनिद्दखओ;
नवनवई चरिमसमए, चउदंसण नाणविग्घंतो. ३०
पणसीइ सजोगिअजोगि, दुचरिमे देवखगइगंधदुगं;
फासट्ठ वन्नरसतणु-बंधणसंघायपण निमिणं. ३१

संघयणअथिरसंठाण-छक्क अगुरुलहु चउ अपज्जत्तं;
सायं व असायं वा, परि-त्तुवंग-तिग सु-सर-निअं. ३२
बिसयरिखओ अ चरिमे, तेरस मणुअतसतिग-जसाइज्जं;
सुभग जिणुच्च पणिंदिअ, सायाऽसाएगयरछेओ. ३३
नरअणुपुव्वि-विणा वा, बारसचरिमसमयंमि जो खविउं;
पत्तो सिद्धिं देविंद-वंदिअं नमह तं वीरं. ३४

इति कर्मस्तव कर्मग्रंथ संपूर्ण

कर्मस्तव अंगेनी कृतिओनी सूचि

कृति नाम	कर्ता नाम
कर्मस्तव नव्य कर्मग्रंथ	देवेंद्रसूरि
कर्मस्तव नव्य-(सं.)प्रकाशवृत्ति	चदनविजय
कर्मस्तव नव्य कर्मग्रंथ-(सं.)स्वोपज्ञ सुखबोधा टीका	देवेंद्रसूरि
कर्मस्तव नव्य कर्मग्रंथ-(सं.)अवचूरि	अज्ञात जैनश्रमण
कर्मस्तव नव्य कर्मग्रंथ-(सं.)अवचूर्णि	गणरत्नसूरि
कर्मस्तव नव्य कर्मग्रंथ-(सं.)टिप्पण	अज्ञात जैनश्रमण
कर्मस्तव-(हिं.)भावार्थ	सुखलालजी संघवी
कर्मस्तव नव्य-(गु.)विवेचन	धीरजलाल डाह्यालाल महेता
कर्मस्तव नव्य-(गु.)विवेचन	भगवानदास हर्षचंद
कर्मस्तव नव्य-(गु.)प्रदीप विवेचन	प्रभुदास बेचरदास पारेख
कर्मस्तव नव्य-(गु.)विवेचन	वोरशेखरसूरि
कर्मस्तव-(हिं.)विवरण	मिश्रीमलजी मधुकर
कर्मस्तव नव्य-(गु.)विवेचन	हर्षगुणाश्रीजी
कर्मस्तव-(गु.)प्रदीप विवेचन	जोवविजय

कर्मस्तव कर्मग्रंथ अंगेनी कृतिओनी सूचि

कर्मस्तव नव्य कर्मग्रंथ-(गु.)गाथार्थ ..... परेशकुमार जसवंतलाल शाह
कर्मस्तव नव्य कर्मग्रंथ-(गु.)विवेचन .....नरवाहनसूरि
कर्मस्तव नव्य कर्मग्रंथ-(मा.गु.)बालावबोध .....कांतिविजय
कर्मस्तव नव्य कर्मग्रंथ-(मा.गु.)बालावबोध .....जयसोम
कर्मस्तव नव्य कर्मग्रंथ-(मा.गु.)बालावबोध ..... मतिचंद्र
कर्मस्तव नव्य कर्मग्रंथ-(मा.गु.)टबार्थ .....जोवविजय
कर्मस्तव नव्य कर्मग्रंथ-(मा.गु.)टबार्थ ..... धनविजय
कर्मस्तव नव्य-(गु.)प्रश्नोत्तरी विवरण .....नरवाहनसूरि
कर्मस्तव नव्य कर्मग्रंथ-(मा.गु.)यंत्र .....समतिवर्द्धन
कर्मस्तव-(हिं.)कोष .....अज्ञात जैनश्रावक
कर्मस्तव-(हिं.)भावार्थ का (गु.)अनुवाद ..... ललिताबाई महासतीजी
कर्मस्तव नव्य कर्मग्रंथ-(गु.)विवेचन .....रसिकलाल शांतिलाल महेता

नोंधपोथी

श्री चारित्ररत्न फा. चे. ट्रस्टना प्रकाशनो

- 500 पूजनप्रतो
- 135 6 भाषाना कथाग्रन्थो (अप्राप्य)
- 350 अप्रगट ग्रन्थो हस्तप्रतोमांथी लखाई गया छे
- 45 आगमग्रन्थो (अप्राप्य)
- 120 सामयिकमां स्वाध्याय काव्यकृतिओ (क्रमसर छपाय छे)
- 25 अचलगच्छेश पू. आ. कल्याणसागरसूरि तथा पू. आ. विद्यासागरसूरि रचित स्तोत्र आधारे खंडान्वय-दंडान्वय
- 75 पू. अचलगच्छेश तथा आचार्य भ., साधु भगवंतना संस्कृतमां जीवनचरित्रो

श्री चारित्ररत्न फा. चे. ट्रस्ट तरफथी २५०० ग्रन्थो प्रकाशित करवानी भावना छे. हाल १२५० ग्रन्थोनी झलक आपी छे. लेखक 'श्री पार्श्व' नुं साहित्य क्रमसर प्रकाशित करवानी भावना छे.

।। उदयो भवतु सर्वेषाम् ।।

Printed by. Navprabhat 98255 98855

અચલગચ્છાધિપતિ પ.પૂ.આ.ભ. શ્રી ગુણસાગરસૂરીશ્વરજી મ.સા.નો સર્વોદયજીનો પરિવાર

ARYA GRAPHICS - 09925801910